संतोष की दुविधा

- चित्रों के माध्यम से इस कहानी को दर्शकों को दिखाकर पढ़ें।
- इस कहनी से, दर्शकों को सोचने में और इस विषय पर बात करने के लिए प्रोत्साहित करें।
- कहानी के अन्त में दिये हुये प्रश्नों से चर्चा की शुरुआत करें।
- इस कहानी से दर्शकों के साथ महिलाओं पर होने वाली मानसिक हिंसा पर चर्चा करें।

कहानी के अगले भाग (2 एवं 3) के लिए कृपया पृष्ठ पलटिए

नहीं यार मोहन, आज-कल मुझे कुछ और बात खा रही है...
पढ़ाई में ध्यान ही नहीं लग रहा है
आहा! समझा! यानि तुझे प्यार हो गया है! हमें भी बताओ
नहीं यार, मजाक मत करो, बात थोड़ी सीरियस है।
किसी को बताना मत मोहन, लेकिन घर में, बात भैया-भाभी की है
तुम्हारे भैया... यानि मास्टर साहब?
अरे, उन्हें तो सिर्फ़ तीन महीने हुए हैं शादी किए
हां, यार...
क्या बात है? क्या तुम्हारी भाभी अलग घर बसाना चाहती है?
नहीं, बात भाभी की नहीं। दरअसल भैया की सोच में फर्क है...
2

Conceptualised, Designed by
invertedcommasindia@yahoo.com

संतोष की दुविधा

- चित्रों के माध्यम से इस कहानी को दर्शकों को दिखाकर पढ़ें।
- इस कहनी से, दर्शकों को सोचने में और इस विषय पर बात करने के लिए प्रोत्साहित करें।
- कहानी के अन्त में दिये हुये प्रश्नों से चर्चा की शुरुआत करें।
- इस कहानी से दर्शकों के साथ महिलाओं पर होने वाली मानसिक हिंसा पर चर्चा करें।

कहानी के अगले भाग (2 एवं 3) के लिए कृपया पृष्ठ पलटिए